मधुबन ओम् शान्ति अंक 403 फरवरी 2026

पत्र-पुष्प

आपसी विश्वास और एकता के आधार से सफलतामूर्त बन।

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहनों प्रति शुभ प्रेरणायें

(याद पत्र 20-01-2026)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा अपनी मन्सा सकाश द्वारा सर्व आत्माओं को सुख शान्ति की अंचली देने वाले, पवित्रता के स्वधर्म को मन-वचन-कर्म से अपनाने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार -जनवरी मास में बाबा के सभी बच्चों ने ब्रह्मा बाप समान बंधनमुक्त, जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव किया। चारों तरफ तपस्या की बहुत अच्छी लहर रही। संगठित रूप में जब सर्व ब्राह्मण आत्मायें एक ही शुभ संकल्प में स्थित होती हैं तो उसके वायब्रेशन विश्व के कोने-कोने में फैलते हैं। इस स्मृति दिवस पर प्यारे अव्यक्त बापदादा ने स्नेह का रेसपान्ड देते हुए हम बच्चों को विशेष दो मास का होमवर्क दिये हैं, जिस पर सभी अवश्य पूरा ही अटेन्शन रखेंगे। बाबा कहते बच्चे, अब अपने संकल्पों को और संगम के अमूल्य समय को व्यर्थ नहीं गंवाना, इसे बचाओ। स्वराज्य अधिकारी बन कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पावर द्वारा मन जीत जगतजीत बनो। समय पर सम्पन्नता की मंजिल पर पहुंचने के लिए पुरुषार्थ में तीव्र शब्द एड कर सदा तीव्र पुरुषार्थी बनो। अभी आपका योग साधारण नहीं, ज्वालामुखी योग चाहिए। तो सभी दो मास अवश्य इसका चार्ट रखकर बापदादा को अपनी रिजल्ट देना जी।

बाकी इस वर्ष शिव भोलानाथ बाबा की अवतरण जयन्ती, शिव जयन्ती का महान पर्व 15 फरवरी को है। इस महान पर्व को बाबा के सभी बच्चे खूब उमंग-उत्साह से मनाते हैं। चारों तरफ शिवबाबा का ध्वज फहराते, प्रभातफेरी निकालते, अनेक स्थानों पर प्रदर्शनियां आदि करते सबको परमात्म अवतरण का शुभ सन्देश देते हैं। इस वर्ष अपने महायज्ञ को 90 वर्ष पूरे हो रहे हैं। तो इस 90 वें महा शिवजयन्ती की सबको ढेर सारी बधाईयां।

अब मीठे बाबा का विशेष यही इशारा है कि बच्चे अब संगठित रूप में आप ब्राह्मण बच्चों की आपस के सम्पर्क की भाषा अव्यक्त भाव की होनी चाहिए। आपस में एक दो में स्नेह और विश्वास भी बहुत जरूरी है तभी संगठन की एकता परमात्म कार्य को प्रत्यक्ष करेगी। बापदादा संगठन को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए बच्चों को एक रूहानी तावीज़ देते हैं, वह तावीज़ है - "सबको रिगार्ड देना, यह रिगार्ड का रिकार्ड ही सफलता का अविनाशी रिकार्ड हो जायेगा।" साथ-साथ मुख पर एक ही सफलता का मन्त्र हो - 'पहले आप'। पहले मैं को मिटाकर दूसरे को आगे बढ़ाना सो अपना बढ़ना समझते हुए, इस महामन्त्र से सदा सफलता को पाते रहना। अब सेवाओं के साथ स्व-स्थिति का बैलेन्स रख आगे बढ़ते परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनना ही है। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी के मोहिनी

मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

ये अव्यक्त इशारे

एकता और विश्वास की विशेषता द्वारा सफलता सम्पन्न बनो

1) अनेक देश, अनेक भाषायें, अनेक रूप-रंग होते भी सबके दिल में एकता दिखाई दे क्योंकि एक बाप के बच्चे हो। सब एक ही वृक्ष की डालियां, एक की श्रीमत पर चलने वाले हो। भिन्नता में एकता दिखाना, बिगड़ी को बनाना, अनेकता में एकता लाना, ये सबसे बड़ी सेवा है। यही कमाल है और यही सफलता का आधार है।

2) किसी भी कार्य की सफलता की दो श्रेष्ठ भुजायें हैं: 1- आपसी विश्वास और 2- एकता, जहाँ संगठित रूप में सभी की एकमत है, आपस में एक दो के प्रति विश्वास है, वहाँ सफलता गले का हार है। संस्कार भिन्न-भिन्न हैं और रहेंगे भी लेकिन अगर कोई का संस्कार टकराने वाला है तो दूसरा ताली नहीं बजावे। हर एक अपने को चेंज कर ले तो एकता कायम रह सकती है।

3) एकता के लिए स्वयं में समाने की शक्ति चाहिए, इससे दूसरे का संस्कार भी अवश्य शीतल हो जायेगा। सदा एक दो में स्नेह की, श्रेष्ठता की भावना से सम्पर्क में आओ, गुणग्राही बनो तो एकता कायम रह सकती है। आपके संगठन की शुभ भावना अनेक आत्माओं को भावना का फल दिलाने के निमित्त बनेगी। उन्हें नई राह मिलेगी।

4) जैसे बाप ने आप सबको कोने-कोने से ढूंढकर निकाल लिया। अनेक वृक्षों की डालियाँ अब एक ही चन्दन का वृक्ष हो गया। लोग कहते हैं – दो चार मातायें भी एक साथ इकट्ठी नहीं रह सकती और आप मातायें सारे विश्व में एकता स्थापन करने के निमित्त हो, यही आपकी आपसी एकता बाप की प्रत्यक्षता करेगी।

5) ब्राह्मण परिवार की विशेषता है – अनेक होते भी एक। आपके सभी सेवाकेन्द्रों का वायब्रेशन ऐसा हो जो सबको महसूस हो कि ये अनेक नहीं लेकिन एक हैं। आपकी एकता का वायब्रेशन सारे विश्व में एक धर्म, एक राज्य स्थापन करेगा। तो विशेष अटेन्शन देकर भिन्नता को मिटाकर एकता कायम करो।

6) संगठन में हर एक की विशेषता को देखना, विशेषता ही ग्रहण करना और कमजोरियों को मिटाने का प्रयत्न करना - यही विधि है, एकता का संगठन मजबूत करने की। जैसे आप सबका उठना, बोलना, चलना एक जैसा है या सबकी एक जैसी बातें, एक ही गति, एक ही रीति, एक ही नीति है, ऐसे ही संस्कार भी समान दिखाई दें। भिन्नता होते भी एक दो में विश्वास रख सबके विचारों को सत्कार दो, यही एकता का आधार है।

7) एकता, स्वच्छता, महीनता, मधुरता और मन, वाणी, कर्म में महानता - यह 5 बातें एक एक के हर कदम से नज़र आयें तो बाप की प्रत्यक्षता सहज हो जायेगी। अभी तक संस्कारों में जो भिन्नता दिखाई देती है, उसे एकता में लाना है। एकता के लिए एक दो की राय को रिगार्ड दो, हाँ जी, हाँ जी करके अपना विचार अवश्य दो, फिर एकता के बन्धन में बंध जाओ, यही एकता सफलता का साधन है।

8) एकता लाने के लिए दो बातें धारण करनी होंगी - एक तो एकनामी बन सदैव हर बात में एक का ही नाम लो, दूसरा - संकल्पों की, समय की और ज्ञान खजाने की इकॉनामी करो। जब सभी ऐसे एकनामी और इकॉनामी वाले बन जायेंगे तब एक बाप में सभी प्रकार की भिन्नता समा जायेगी।

9) जैसे मणकों की विशेषता होती है - एक जैसे मणके माला के एक ही धागे में पिरोये जाते हैं। ऐसे आप सभी वैजयन्ती माला के मणके भी जब एकमत, एक की ही लगन में एकरस स्थिति वाले एक दिखाई देंगे तब ही माला में पिरोये जायेंगे। अगर आपस में दो मतें होती हैं तो वह दूसरी अर्थात् 16000 की माला के दाने बन जाते हैं।

10) एक मत अर्थात् एकता का वातावरण बनाने के लिए समाने की शक्ति धारण करो। भिन्नता को समाओ। हर एक की विशेषताओं को देखो, कमियों को तो बिल्कुल देखना ही नहीं है। जैसे चन्द्रमा अथवा सूर्य को ग्रहण लगता है तो कहते हैं कि देखना नहीं चाहिए, नहीं तो ग्रहचारी बैठ जायेगी। तो किसकी कमी भी ग्रहण है, उसे कभी नहीं देखो।

11) एकता के दो आधार है – एक-फेथ (विश्वास), दूसरा-लव (प्यार)। कभी भी एक दो में विश्वास कम न हो, एक ने कहा दूसरे ने माना... यही विधि है एकता के सूत्र में पिरोने की। दिल का आपसी स्नेह समीप ले आता है। जैसे बाप से सबका स्नेह है ऐसे

परिवार से भी दिल का सच्चा स्नेह हो, इसके लिए स्वमान में रहकर सबको सम्मान दो।

12) ज्ञानी बनने के साथ-साथ स्नेही बनो। स्व की सेवा विश्व सेवा का आधार है। सेवा में सिर्फ दो शब्द याद रखना - एक निमित्त हूँ, दूसरा निर्मान बनना ही है, इससे एकता का वातावरण बनेगा। एक दो के सहयोगी बनेंगे। तेरे मेरे की, मान-शान की, टकराव की भावनायें समाप्त हो जायेंगी।

13) हर एक को दो बातें विशेष ध्यान में रखनी हैं - एक सदा संस्कारों को मिलाने की यूनिटी। दूसरा एक दो में विश्वास रख सदा सन्तुष्ट रहना है और सबको सन्तुष्ट करना है। जब यह दोनों बातें सदा ध्यान पर रहेंगी तब बाप जो है जैसा है, वैसा दिखाई देगा और प्रत्यक्षता होगी।

14) अभी सभी मिलकर एकमत हो सेवा के कोई भी कार्य को धूमधाम से आगे बढ़ाओ। हर ब्राह्मण आत्मा के सहयोग से, शुभ कामनाओं, शुभ भावनाओं से सेवाओं की धूम मचाओ। अगर कोई मुख से बोल नहीं सकते तो मन्सा वायुमण्डल से सुख की वृत्ति, सुखमय स्थिति से सुखमय संसार बनाये। कहाँ जा नहीं सकते हो, तबियत ठीक नहीं है तो घर बैठे यह सेवा करो, सेवा में सहयोगी जरूर बनो तब सर्व के सहयोग से सुखमय संसार बनेगा।

15) दुनिया के आगे अब यही वास्तविकता दिखानी है कि हम सब एक हैं, एक के हैं, एकरस स्थिति वाले हैं। एक की लगन में मगन रह एक का नाम प्रत्यक्ष करने वाले हैं, अब यह न्यारा और प्यारा गोल्डन स्थिति का झण्डा लहराओ। छोटे हो या बड़े हो, बीमार हो या स्वस्थ हो, महारथी हो व घोड़ेसवार, सभी एकमत होकर सहयोगी बनो तो सहज सफलतामूर्त बन जायेंगे।

16) अभी तक अलग-अलग फूल अपनी-अपनी रंगत दिखा रहे हैं लेकिन जब गुलदस्ते के रूप में अपनी खुशबू फैलायेंगे, शक्ति दल प्रत्यक्ष होगा, तब यह संगठन की शक्ति परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनेंगी। अभी एक-एक अलग होने के कारण मेहनत ज्यादा करनी पड़ती है लेकिन जब संगठन एकमत होगा तो मेहनत कम सफलता जास्ती होगी।

17) संगठन का बल, स्नेह का बल, एक दो को सहयोग देने का बल और सहनशीलता का बल जमा करो तो माया कभी वार नहीं कर सकेगी, फिर जयजयकार का नारा लगेगा। जब इतने सभी अनेक होते भी एक दिखाई देंगे, एक की ही लगन में मगन, एकरस स्थिति में स्थित होंगे तब प्रत्यक्षता की निशानी देखने में आयेगी। आप सबकी प्रतिज्ञा ही प्रत्यक्षता को समीप लायेगी।

18) जैसे सर्व आत्माओं को ज्ञान की रोशनी देने के लिये सदैव शुभ भावना व कल्याण की भावना रखते हो। ऐसे अपने इस दैवी संगठन को भी एक-रस स्थिति में स्थित कर संगठन की शक्ति को बढ़ाने का प्रयत्न करो तब आपके इस दैवी संगठन की मूर्त में एकता और एकरस स्थिति का प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार होगा।

19) इस परमात्म-ज्ञान से ही विश्व में एक धर्म, एक राज्य, एक मत की स्थापना होती है। आपके इस ब्राह्मण संगठन की विशेषता – देवता रूप में प्रैक्टिकल चलती है। यह विशेषता ही कमाल करेगी, इससे ही नाम बाला होगा, प्रत्यक्षता होगी। तो इस विशेषता में नम्बरवन बनो। इसके लिए जो अपना मूल संस्कार है, उसको मिटाकर बापदादा के संस्कारों को कॉपी कर समान और सम्पूर्ण बनो तब हर एक से बाप दिखाई देगा और प्रत्यक्षता होगी।

20) संगठित रूप में आप ब्राह्मण बच्चों की आपस के सम्पर्क की भाषा अव्यक्त भाव की होनी चाहिए। जैसे फरिश्ते अथवा आत्मायें आत्माओं से बोल रही हैं। इसके लिए किसी की सुनी हुई गलती को संकल्प में भी न स्वीकार करना और न कराना। ऐसी जब स्थिति हो तब ही बाप की जो शुभ कामना है - एकमत संगठन की, वह प्रैक्टिकल में होगी और आपके द्वारा बाप प्रत्यक्ष होगा।

21) एकता के लिए एक रूहानी तावीज़ सदा अपने पास रखना कि रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। यह रिगार्ड का रिकार्ड सफलता का अविनाशी रिकार्ड हो जायेगा। मुख पर एक ही सफलता का मन्त्र हो - ''पहले आप'' – यह महामन्त्र मन से पक्का रहे। यथार्थ रूप से पहले मैं को मिटाकर दूसरे को आगे बढ़ाना सो अपना बढ़ना समझते हुए इस महामन्त्र को आगे बढ़ाते सफलता को पाते रहो, यह मन्त्र और तावीज़ सदा साथ रहे तो प्रत्यक्षता का नगाड़ा बज जायेगा।

22) धर्म सत्ता वालों के सामने पवित्रता की शक्ति और राज्य सत्ता वालों के आगे एकता की शक्ति को सिद्ध करो। इन दोनों ही शक्तियों को सिद्ध करने से ईश्वरीय सत्ता का झण्डा बहुत सहज लहरा जायेगा। अभी इन दोनों की तरफ विशेष अटेन्शन चाहिए। जितना-जितना प्युरिटी और युनिटी की शक्ति से उन्हों के समीप सम्पर्क में आते रहेंगे उतना वह स्वयं ही अपना वर्णन करने लगेंगे।

23) संगठन को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए वाणी की शक्ति पर विशेष ध्यान दो। वाणी सदा निर्मल हो, कम बोलो, धीरे बोलो और मीठा बोलो। सम्मानजनक बोल ही बोलो। अभी तक साधारण बोल ज्यादा हैं। 'अलौकिक बोल हों, फरिश्तों के बोल हों', हर बोल मधुर हो। अभी इस बात पर अन्डरलाइन करो तब प्रत्यक्षता होगी।

24) बाप की प्रत्यक्षता का आधार है - साधारण कार्य में रहते हुए भी फरिश्ते की चाल और हाल हो। ऐसे नहीं कहो कि क्या करें बात ही ऐसी थी, काम ही ऐसा था, सरकमस्टांश ऐसे थे, समस्या ऐसी थी इसलिए साधारणता आ गई। किसी समय भी, किसी हालत में भी आपका अलौकिक स्वरूप हर एक को अनुभव हो। जैसी बात वैसा अपना स्वरूप नहीं बनाओ। बातें आपको बदल न दें तब सबके समीप आयेंगे और एकता का संगठन मजबूत होगा।

25) आपमें जो भी विशेषतायें हैं, उनको सामने रखो, कमजोरियों को नहीं, तो अपने आप में फेथ रहेगा। कमजोरी की बात को ज्यादा नहीं सोचना, तो सदा खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे। प्रैक्टिकल में अनेक देश, अनेक भाषायें, अनेक रूप-रंग लेकिन अनेकता में भी सबके दिल में एकता है ना! क्योंकि दिल में एक बाप है। एक श्रीमत पर चलने वाले हो। अनेक भाषाओं में होते हुए भी मन का गीत, मन की भाषा एक है।

26) बापदादा चाहते हैं कि बच्चों की पहले साथियों में, सेवा में, वायुमण्डल में एकता हो, फिर एक बल एक भरोसा, एकमत हो तब सेवा में सफलता मिलेगी। जैसे नारियल तोड़कर, रिबन काटकर उद्घाटन करते हो, ऐसे एकमत, एकबल, एक भरोसा और एकता की रिबन काटो और फिर सर्व के सन्तुष्टता, प्रसन्नता का नारियल तोड़ो। यह पानी धरनी में डालो फिर देखो सफलता कितनी होती है।

27) स्व उन्नति और सेवा की उन्नति दोनों में एक ने कहा, दूसरे ने हाँ जी किया, ऐसे सदा एकता और दृढ़ता से बढ़ते चलो। जैसे दादियों की एकता और दृढ़ता का संगठन पक्का है, ऐसे आप रत्नों का भी संगठन पक्का हो, तो संगठन की शक्ति जो चाहे वह कर सकती है। संगठन की निशानी का यादगार है पांच पाण्डव।

28) बापदादा चाहते हैं कि हर बच्चा एकरस श्रेष्ठ स्थिति के आसनधारी, एकान्तवासी, अशरीरी, एकता स्थापक, एकनामी, एकॉनामी का अवतार बने। एक दो के विचारों को समझ, सम्मान दे, एक दो को इशारा दे, लेन-देन कर आपस में संगठन की शक्ति का स्वरूप प्रत्यक्ष करो क्योंकि आपके संगठन के एकता की शक्ति सारे ब्राह्मण परिवार को संगठन में लाने के निमित्त बनेगी।

(त्रिमूर्ति दादियों द्वारा मिली हुई अनमोल शिक्षायें)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 21-01-2026 *मधुबन*

गुल्जार दादी जी की अनमोल शिक्षायें

"कर्मातीत बनने के लिए कर्मेन्द्रिय जीत बन कर्मेन्द्रियों से कर्म कराओ"

(14-11-11)

आप सभी सेवा और मिलन मनाने के लिये अपने घर में पहुँच गये हो। यह चांस भी हर ज़ोन को मिलता है और खुशी-खुशी से सब निभा रहे हैं। इस चांस से सारे ब्राह्मण परिवार को नज़दीक से देखने को मिलता है। सेवा का बल भी मिलता है, फल भी मिलता है। किसी की भी सेवा करो तो पहले अपनी भी अवस्था ऐसी ही बनती है तब उसकी सेवा होती है। तो सेवा का बल अपने में भरता है और जिसकी सेवा करते हैं उनमें भी बल आता है। सेवा के चांस को प्यार से स्वीकार करके सेवायें कर रहे हैं और करते रहेंगे। सभी ऐसा सेवा का चांस लेने में खुश हैं, हम भी खुश हैं और जिस टर्न की सेवा होती है, उन पर बाबा की भी स्पेशल नज़र रहती है। यहाँ पर कोई भी सेवा करते सुबह से शाम तक सभी के मुख पर बाबा बाबा शब्द ही निकलता है। मन में भी सिवाए बाप के और कुछ याद नहीं आता। यहाँ के वायुमण्डल में हर एक बाबा की मस्ती में रहता है इसलिए बाबा के अलावा और कुछ याद आता ही नहीं है। सेवा के यह 8-10 दिन जीवन के विशेष दिन हैं इसलिए इसे एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं गँवाना क्योंकि यहाँ सब प्रकार की मदद है तो उसका लाभ लो। अपने में जो भी कमी-कमजोरी, गलतियाँ समझते हो, यहाँ बाबा के घर में छोड़के, परिवर्तन करके जाओ तो बल मिलेगा। यहाँ शक्तिशाली आत्माओं को देख करके अपनी गलती जल्दी समझ में आती है, मेरे में यह है, यह है तो वो महसूसता होती है। योगयुक्त होके अमृतवेले बाबा को सुनाके बाबा से वरदान ले सकते हैं। बाबा ने तो वरदान देने लिये ऑफर किया है लेकिन उसे लेने लिये स्थिति भी ऐसी चाहिए। चलते-चलते पुरुषार्थ ढीला होने का कारण है दृढ़ता में कमी आ जाती है। दृढ़ता माना करना ही है और

जहाँ जितनी दृढ़ता है वहाँ उतनी सफलता हुई पड़ी है। कोई कैसा भी है, कुछ भी होता है फिर भी हरेक के प्रति रहमदिल बन, शुभ भावना शुभ कामना रखते सभी को बाबा के नज़दीक लाना है।

बाबा तो अब समय प्रमाण चाहता है कि मेरा एक एक बच्चा कर्मातीत अवस्था के नज़दीक आ जाये। कर्मातीत का अर्थ है अतीत (न्यारे) हो जाना फिर तो चले जायेंगे लेकिन अभी कर्मातीत का अर्थ यह है कि कर्म के बन्धन से मुक्त होना। जब चाहें कर्मेन्द्रियों से अपने को न्यारा और प्यारा कर सकें और जब चाहें तब कर्मेन्द्रियों का आधार लेके कर्म करें, वश नहीं हों। जैसे देखो कभी गुस्सा आता है, यह भी तो कर्म है ना तो जब गुस्सा आता है तब इतना ही कहते हैं अरे, शान्त हो जाओ, शान्त हो जाओ। लेकिन गुस्सा अपने तरफ इतना खींचता है जो उस बन्धन से मुक्त नहीं हो सकते हैं। इच्छायें जो उत्पन्न होती है वो इतने वश कर देती हैं जो हम चाहते हैं यह ऐसा कर्म नहीं करें लेकिन कर्म के बन्धन में आ जाते हैं। तो कर्मातीत बनना माना कर्म के बन्धन में नहीं आयें, कर्म तो करना पड़ेगा क्योंकि कर्मेन्द्रियों का आधार लिया है तो कर्म तो करेंगे लेकिन कर्म करते भी कर्म के बन्धन से न्यारा और बाप का प्यारा। तो हम सभी कर्मातीत बनने के पुरुषार्थ में हैं, कोई भी कर्म करें लेकिन मालिक होके कर्म करें क्योंकि कर्मेन्द्रियाँ मेरी हैं ना, तो जो मेरा है उसका मैं मालिक हूँ, तब तो मेरा कहते हैं। तो कोई भी कर्मेन्द्रिय कर्म के लिये मिली हुई है लेकिन वो कर्मबन्धन में नहीं लावे, ऐसे कर्मातीत अभी हम बन सकते हैं।

लेकिन कर्म के पहले आधार जो है पहले संकल्प चलता है यह करो, यह नहीं करो, संकल्प आता है और संकल्प उत्पन्न कौन करता है? मन। मन में ही संकल्प उत्पन्न होते हैं। तो कर्मातीत बनने के लिये हमको मनजीत भी बनना पड़े क्योंकि मन मेरा है ना, मैं मन कभी कोई गलती से नहीं कहेगा। कहेगा आज मेरा मन थोड़ा उदास है या मेरा मन बहुत खुश है, मैं मन आज उदास हूँ, ऐसा कोई अगर गलती से भी कहे तो सभी हँसेंगे। तो मन मेरा है अगर मन मेरा है तो मैं जो संकल्प करने चाहूँ वो कर सकती हूँ। ऐसे नहीं कि कोई इच्छा उत्पन्न हो और उसके वश मैं हो जाऊं तो यह कर्मातीत स्थिति नहीं है। कर्म के बन्धन में आ गया ना, मालिक तो मैं हूँ ना, तो कर्म के कोई भी बन्धन में न आना अर्थात् कर्मातीत। बाकी तो कर्मातीत हो जायेंगे फाइनल, फिर तो हम अपने राज्य में चले जायेंगे। लेकिन अभी कर्मेन्द्रियों के आधार में रहना है, रहते हुए भी कर्मातीत अवस्था का अनुभव करना है तो कोई भी कर्म के बन्धन में नहीं आये। उसके लिये हमको मन जीत बनना पड़ेगा, जो संकल्प चाहूँ वो कर सकती हूँ, जो संकल्प फालतू माना अयथार्थ है या व्यर्थ है तो यह व्यर्थ खत्म हुआ? इससे व्यर्थ समय भी बच जाता है।

तो कर्मातीत बनने के लिये इस समय संगम पर मन जीत भी बनना पड़े क्योंकि संकल्प पैदा होता है मन में। और मनजीत बनने के लिये मैं आत्मा मालिक हूँ, इस शरीर का, हर कर्मेन्द्रियों का मालिक मैं हूँ। जैसे हाथ को जब जैसे मोड़ना हिलाना चाहें तो हिला सकते हैं, ऐसे मन भी मेरे वश में आ जाये। जब चाहूँ जो संकल्प चाहूँ, ऐसे नहीं मैं शुभ संकल्प करना चाहता हूँ और आ जाये व्यर्थ संकल्प क्योंकि ऐसे कई बहन भाई कहते रहते हैं कि मैं तो शुद्ध संकल्प करने बैठता हूँ पर व्यर्थ संकल्प आ जाते हैं। आ जाते हैं माना मालिकपन नहीं है, आत्मा हो लेकिन मा. सर्वशक्तिवान नहीं हो तभी यह होता है, इससे सिद्ध है कि मन के ऊपर कन्ट्रोल नहीं है। मन के ऊपर कन्ट्रोल है तो मन पर जीत है। तो पहले चेक करो कर्मातीत बनने के लिये हमारी मन के ऊपर जीत है? मन के मालिक हैं? तो हम सभी अपने आपसे पूछे कर्मातीत अवस्था के नज़दीक आ रहे हैं? अपने कर्मेन्द्रियों के ऊपर कन्ट्रोल हैं? जब चाहें जिस कर्मेन्द्रियों को चाहे यूज़ करे मालिक होके चला सकते हैं? अगर आदत के कारण बुद्धि खाने, पीने, पहनने में जाती रहे तो आत्मा मालिक कर्म के वश है ना। तो यह चेक करो कि कोई कर्मेन्द्रियों के वश तो हम नहीं हैं? बाबा के साथ वही जायेगा जो कर्मेन्द्रियों को जीता हुआ होगा। जैसे ब्रह्मा बाबा कर्मेन्द्रियों को जीतने वाला बना। ऐसे नहीं दिल हुई ना तो बोल भी दिया, कर भी दिया तो कर्म के बन्धन में बंधा हुआ कहेंगे ना। तो जो कर्मेन्द्रियों के वश होगा वो कैसे ब्रह्मा बाप समान कहलायेगा इसलिए चेक करो कौनसी कर्मेन्द्रिय अभी भी मुझे अपने तरफ आकर्षित करती है? चाहे नये हैं या पुराने सबको साथ चलना है तो समान बनना पड़ेगा। हम सभी कर्म बन्धन से न्यारे होंगे तो साथ चलेंगे। तो यही बाबा की रोज़ शिक्षा मिलती है।

देहभान से मुक्त होने वाले कर्मातीत हो सकते हैं। देहभान यानि मैं शरीर हूँ यह फीलिंग और देहअभिमान माना कोई न कोई विशेषता का अहंकार, तो देहभान से भी देह अहंकार बहुत धोखा देता है इसलिए बाबा कहता है देह अभिमान तो रखना ही नहीं है, पर देहभान से परे होना है। मैं आत्मा हूँ, मैं शरीर नहीं हूँ यह देहभान से परे। कोई भी कर्मेन्द्रिय मुझे अपने तरफ खींचे नहीं तभी हम कर्मातीत बनके बाबा के साथ चलेंगे। तो ऐसे रेडी हैं? बस, यह आत्मा का पाठ जो है वो बीच-बीच में स्मृति और चेकिंग चाहिए। कर्म में आत्मा का भान भूल जाता है यानि कर्म अपने तरफ खींच लेता है। तो अभी यहाँ से यह अभ्यास करके जाओ हम कर्मातीत बनें, और सर्वशक्तिवान की शक्तियां सौगात ले जाओ। बाबा तो दे रहा है इसलिये कहता रहता है ले लो, बच्चे बाप समान बन जाओ। तो वहाँ जा करके यह हो गया वो हो गया, ऐसे नहीं कहना। तो मेरा बाबा मेरा बाबा कहते रहो, तो मेरी चीज़ भूलती नहीं है, मेरा छूटता नहीं है। उस मेरे को तो पूरा ही छोड़के जाना। अधूरा नहीं छोड़ना, छोड़ना तो पूरा छोड़ना। इसमें हिम्मते बच्चे, मददे बाप। दिल से दृढ़ संकल्प करो कि बाबा आज से मैंने यह छोड़ा तो बाबा एक्स्ट्रा मदद

देगा, दे रहा है लेने वाला लेवे। दृढ़ता सफलता की चाबी है। दृढ़ता सदा साथ रहे उसके लिये बार-बार अपनी चेकिंग करो क्योंकि कोई संकल्प ऐसा आता है जो दृढ़ता कमजोर होती है। उस संकल्प को फौरन ही कट करके यही गीत गाओ पाना था सो पा लिया...।

तो बाबा के आगे अभी ऐसा दृश्य दिखायेंगे, बाबा जो आप चाहते हैं वो हम करेंगे ही। तो सभी को कर्मातीत बनना ही है तो कोई भी कर्मेन्द्रियों के वश नहीं हो जाओ फिर चेहरा कभी मुरझायेगा नहीं, खुशनुमा खिला हुआ फूल समान सदा खुश दिखाई देंगे। क्योंकि परमात्मा मिला है, कोई साधारण बात है क्या! दुनिया में परमात्मा को मिलने के लिये बिचारे क्या क्या नहीं कर रहे हैं और वो आ करके हमारा पिता बन गया इसलिए हम कितने खुशनसीब हो गये! अच्छा है, साल में एक बारी ऐसी विशाल सभा में सब इकट्ठे मिलते हैं और हम भी खुश हो जाते हैं इतने भाई बहनें कहाँ मिलेंगे फिर, अभी तो मिले हैं ना। कल बाबा भी देखके खुश हो जायेगा। और चाहिए क्या हमको? अरे, सर्वशक्तिवान बाबा हमारा हो गया और क्या चाहिए! पाना था सो पा लिया काम क्या बाकी रहा... पा लिया ना सभी ने? अरे, परमात्मा को पा लिया और क्या चाहिए? अच्छा, ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

"अशरीरी बनने के प्रैक्टिस है तो मायारूपी मच्छर मक्खी पास नहीं आ सकते"

(10-11-06)

अमृतवेले याद में बैठते हैं तब बाबा के बालक हैं, फिर शाम को बैठते हैं तो मालिक हैं... ऐसे अनुभव होता है? सुबह को योगी, पढ़ाई के समय ज्ञानी, दिन में हैं कर्मयोगी। कर्मयोगी सबके साथ मिल-जुलकर काम करता है। अपनी विशेषता अनुसार बाबा को मदद करता है क्योंकि हरेक की अपनी-अपनी विशेषता होती है। अपनी जो भी विशेषता है, उस विशेषता से कोई भी सेवा करने से पता चलता है कि हाँ, यह तो मैं कर सकता हूँ। उसके लिये किसी को कोई ट्रेनिंग आदि लेने की बात नहीं है। भगवान कैसे सिखाता है जो और कोई सिखा नहीं सकता है क्योंकि अनुभव से सब सीख जाते हैं।

छोटे हैं तो बाबा अंगुली पकड़ता है। बड़े होते हैं तो अंगुली के इशारे समझते हैं, बड़ों को तो इशारों को कैच करके चलना है। जो सयाने, समझदार हैं उसको बाबा कहते हैं अब क्या करने का है - यह पूछो मत, सोचो मत। समय की समीपता को देख जल्दी इशारे से काम करते चलो। पूछने में समय जाता है, सोचने में समय गँवाता है। बाबा कहते हैं तुम्हारे पास समय का खज़ाना बहुत है। ज्ञान का खज़ाना, गुणों का खज़ाना है, शक्तियों का खज़ाना है। संगम के सुहावने समय ने यह सब खज़ाने दिलाये क्योंकि संगम के समय की समझ न होती तो हमारे में ज्ञान कहाँ से आता? गुण और शक्तियाँ कहाँ से आती? तो संगमयुगी समय के महत्व को समझा। अब समय नहीं गँवाना है। बाबा यह कह रहा है तो मुझे यह करना है। बस। सारा अटेन्शन जब बाबा की तरफ चला जाता है तो बाबा ने जो करने को कहा वो हो जाता है। किसी का कोई कर्म-बन्धन, कोई हिसाब-किताब... आपेही चुक्तू हो जाए। तो यह वन्डर है, हरेक के अनुभव निराले हैं।

भले एक ही फैमिली के हैं, पर हरेक का पार्ट अपना है। लौकिकता से अलौकिकता में आ गया। लौकिकता छूट गई तो अब साधारणता भी अच्छी नहीं लगती है क्योंकि बाबा सारा दिन ऊंची स्थिति में रहकर ऊंचा पार्ट बजाने की बात समझाता है, न सिर्फ मुरली के समय याद दिलाता है। चलते फिरते, खाते-पीते याद दिलाता ही रहता है। तो बाबा का बनने से कितनी खुशी हुई है! बाबा के घर में जो भी काम करूँ, उससे मैं भी खुश, मेरे से और भी सब खुश। तो खुशी से करने से जो करते हैं वो एक्यूरेट करते हैं। इसलिए जो भी सेवा करो वह प्यार से करो, अच्छी तरह से करो तो एक्सरसाइज़ की जरुरत ही नहीं पड़ेगी। थकान भी नहीं होगी और खुशी भी बहुत होगी।

सर्व के सहयोग से कितना भी बड़ा काम हो, सहज कर सकते हैं। जो ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारियाँ हैं वो सहयोगी बनने का, बड़ा अक्ल का काम सीख गये हैं क्योंकि ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारों को योगी बनने के लिये थोड़ी मेहनत करनी पड़ती, पर सहयोगी बनने में मेहनत नहीं है। सहयोगी बनने में सिर्फ सच्चाई (सत्यता) चाहिए, योगी बनने में एकाग्रता चाहिए। और एक अच्छा मिसाल बनने के लिये सबको सच्ची दिल से खुश करते चलो। सदा खुश रहकर सर्व को सदैव खुशी का खज़ाना बाँटते चलो। जो कुछ किसको देता है, ज्ञान दिया, गुण दिया, कुछ भी किया तो वो बढ़ता है, कम नहीं होता है। जो जितनी मेहनत करेगा वो उतना कमायेगा। पर दान की कमाल होती है, जितना देते जाओ उतना बढ़ता है। दानी को कोई मेहनत नहीं है लेकिन कमाई करने वाले को मेहनत करनी पड़ती है।

जरा केयरलेस होगा या कोई थोड़ी गफ़लत हुई तो कमाई का चांस गँवा बैठेगा, आज कमाया कल गँवाया। पर दान करने वाले की कमाल है, जितना दान करता है उतना बढ़ता है। निमित्त भाव, नम्रता स्वरूप, निर्मल स्वभाव है तो सब सेवायें बाबा आपेही कराता है। बाबा ने जो सत्य कर्म, श्रेष्ठ कर्म किया उसका फल हम खा रहे हैं।

मैं आत्मा ईश्वर की सन्तान हूँ इस स्मृति से नशा चढ़ता है। आत्मा समझने से देहभान छूटता है। घड़ी-घड़ी मैं आत्मा हूँ, आत्मा हूँ... यह भान रहने से मन शान्त रहता है, कर्मेन्द्रियाँ कन्ट्रोल में रहती हैं। कोई भी कर्मेन्द्रिय कभी धोखा नहीं दे सकती। यह आँखें बड़ी धोखेबाज़ हैं, पर यह जीभरस खाना और बोलना भी कम नहीं है, इससे पता चलता है मायाजीत है या नहीं! कहाँ से माया ज्यादा आती है? कान से भी आती है, आँख से भी आती है। तो खाते-पीते भी बहुत ध्यान हो अपने उपर। खाने पर भी बाबा याद रहे, पानी पीते समय भी बाबा भूले नहीं, इतना अन्दर से ऑटोमेटिक याद रहे। दुनिया में तो शुद्ध पानी भी नहीं मिलता है, यहाँ तो पानी शुद्ध और हवा भी फ्रेश है। जो कहीं नहीं मिलता है वो इस बाबा के घर में मिलता है। तो बाबा के गुणगान करते रहो जिससे बाबा के सब गुण हमारे में आ जाएं। बाप की जो महिमा है वह हमारी हो जाये। जब बाप के गुणों पर ध्यान होगा तो वो गुण हमारे में आते रहेंगे।

प्यार के सागर बाबा की याद में डुबकी लगाते जाओ तो बुद्धि बड़ी शक्तिशाली हो जाती है। फिर लगेगा कि झूठी माया, झूठी काया, झूठा सब संसार... यह सब झूठ है और यह एक बाप ही सत्य है। तो ज्ञान के सागर बाप की याद में डुबकी लगाओ तो रत्नों से मालामाल हो जायेंगे। ज्ञानामृत से जो मीठा नहीं बना है उसको कभी ज्ञान-रत्नों से खेलने आयेगा नहीं। बॉल की जगह अगर पत्थर से कोई खेले तो क्या हाल होगा? ठीक ऐसे ही जैसा हम बोलेंगे वैसा सुनेंगे। बाबा कहते जैसा तुम्हारा संकल्प होगा वैसा वायब्रेशन जायेगा। कहाँ भी हो, किसके लिये कोई संकल्प हो तो वो पहुँचता है। तो हमारे संकल्प में इतनी शुद्धि, श्रेष्ठता और इतनी अच्छी भावना हो - तो पास है या दूर है वो वायब्रेशन पहुँच जाता है।

तो कम-से-कम ईश्वर की सन्तान हूँ, ईश्वरीय सेवा है और ईश्वरीय परिवार है - यह कब न भूले। मेरे से बड़ा है या छोटा है, उस घड़ी परिवार है। अगर मेरे अन्दर यह ख्याल आया कि यह छोटा है, समझदार नहीं है तो मुझे प्यार के सागर बाबा से जैसे कि कुछ मिला ही नहीं है। तो ख्याल में भी हमारी खुशी खत्म हो जाती है। दूसरे को खुश करने का है ही नहीं तो देगा क्या? फिर मेरी प्रालब्ध क्या बनेगी। लेट तो हो गया है, समय तो गंवाया है, सफल नहीं किया है। जिसने समय सफल किया है, औरों को समय का सहयोग दिया है, उसके आगे कोई भी मुश्किल नहीं है, वह मुस्कराते हुए पार करेगा।

एंजिल बनना है तो अपने दिल में बाबा को बिठा दो, तो महावीर बन जायेंगे। महारथी के आगे माया आयेगी पर महावीर के आगे माया नहीं आ सकती है। वो तो माया को बन्दूक लगाने वाला है। महारथी की टेस्ट करने के लिये उसके सामने माया के मक्खी मच्छर आ सकते हैं, पर महावीर के सामने नहीं आ सकते हैं। अशरीरी बनने की प्रैक्टिस नहीं होगी तो मच्छर-मक्खी आयेंगे। पर महारथी अपने को समझने से उसे भगाता भी है, पर कभी मच्छर काट भी लेता है। पर महावीर हनुमान की जय है। महारथी कोशिश कर रहा है, वैजयंती माला में आने के लिये नम्बरवार पुरुषार्थी है। पर महावीर तो सदा राम (बाप) को साथी बना करके हर बात में सफलता गले का हार अनुभव करता है। निश्चय में विजय है, यह अटल विश्वास है। हुआ ही पड़ा है, सो हो रहा है। तो अपने लक्षण देखो - महारथी के हैं या घोडेसवार के हैं? महारथी को भी बड़ा ध्यान रखना है - कोई ऐसा संग, ऐसी कोई बात लेस-मात्र भी आई, थोड़ा भी शक्ल पर आया तो महारथी की पोजीशन से उतरा। तो पोजीशन से आपोजिशन की कितनी भी बातें आये परन्तु स्वयं अपने मन बुद्धि को सेट करके सीट पर बैठ जाओ तो सारा आपोजिशन आपेही धीरे धीरे खत्म हो जायेगा। कई ऐसे हैं - जैसे छोटा बच्चा जो होता है वो एक जगह पर शान्त बैठ नहीं सकता, इधर देखता उधर देखता, फालतू सोचता, योग में मुश्किल से बैठता क्योंकि बुद्धि बार-बार बाहर जाती रहती है, यहाँ संगठन में निमित्त मात्र बैठा हुआ है।

मन में कभी गहरी शान्ति का अनुभव होता है तो बाबा के लिये प्यार बहुत पैदा हो जाता है। कभी ज्ञान की अच्छी बात याद आती है तो बाबा बड़ा अच्छा लगता है। तो बाबा ज्ञान का सागर है, शान्ति का सागर है, प्यार का सागर है, आनन्द का सागर है। शान्ति और प्रेम इन दोनों से न सिर्फ खुशी पर आनन्द स्वरूप स्थिति हो जायेगी। खुशी स्वरूप नहीं कहेंगे, सुख स्वरूप नहीं कहेंगे लेकिन आनन्द स्वरूप कहेंगे। बाबा कहते - तुम्हें ब्राह्मण बनाया है तो तुम पहले ब्राह्मणों के गुण धारण कर लो। स्व-दर्शन चक्रधारी ब्राह्मण कुलभूषण किसको कहा जाता है वो ध्यान रखो। तो ब्राह्मणों में भी मेरा पार्ट ऐसा विशेष हो जिसमें पवित्रता है, सत्यता है, नम्रता है, धैर्यता है, गम्भीरता है तो ऐसा ब्राह्मण जहाँ है वो शोभता है। ऑटोमेटिकली सभी के दिल में उसके लिये प्यार, रिस्पेक्ट पैदा होता है। मैंने इतनी मेहनत की पर मेरे लिये कोई यहाँ रिस्पेक्ट नहीं है, जब यह ख्याल आया तो रिस्पेक्ट और ही दूर होती जाती है। रिस्पेक्ट तो गुणवान को आपेही मिलता है, इसके लिये धीरज रखो तो तेरे सुख के दिन आयेंगे। ऐसे थोड़ेही खुश करने के लिये कोई महिमा करे, दिल से महिमा करे। वाणी में मधुरता है, कोई किसी को किसी भी कारण से क्रिटिसाइज़ करने का संस्कार नहीं है तो रिस्पेक्ट पैदा होगा। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

1) हम सब बातों से परे परमयोगी हैं। परे रहने वाले ही परमधाम निवासी होकर रह सकेंगे। हमें सब खाते खत्म करके विकर्माजीत बनना है, अभी कोई खाता नहीं रखना है। हमें किसी भी इस दुनिया की हवाओं का शौक नहीं चाहिए। हम सारी दुनिया के शौकों से मर चुके, हमें दुनिया की किसी भी मात्रा का शौक नहीं। शौक है मेरा बाबा बस और कोई नहीं। सर्विस बाबा की है, बच्चे बाबा के हैं, यज्ञ बाबा का है। जीवन बाबा की है, धन बाबा का है। कमाते बाबा के लिए हैं। करते बाबा के लिए हैं। जीते बाबा के लिए हैं। सब कुछ बाबा है- यह है एक शौक। बाकी कोई शौक नहीं। हाँ जहाँ तक जीना है वहाँ तक सीखना है। पढ़ाई का शौक जरूर रखना है लेकिन ऐसे भी नहीं पढ़ाई का शौक है तो सेवा से किनारा हो जाए। हर बात का बैलेन्स चाहिए। योगी हूँ- यह मेरी दिन-रात की पर्सनल श्वास है, यह मेरा पर्सनल इन्ट्रेस्ट है। परन्तु हम हैं ही योगी, खायें-पियें, उठे-बैठें... योग में। इसका नाम है निरन्तर योगी। इसका मतलब यह नहीं कि टाइम मिले तो स्वीट साइलेन्स का मजा न लो.. वह भी जरूर लो। टॉक से ज्यादा स्वीट साइलेन्स में रहो। बाबा का यह महावाक्य याद रखो- कि हमें अपनी मीठी जबान रखनी है, सुना न सुना करना है। हमें लाइट हाउस बनना है, फर्स्ट ग्रेड योगी बनना है। इसलिए स्वीट साइलेन्स का मजा भी जरूर लेना है।

2) ज्ञानी योगी उनको कहा जाता जो त्रिकालदर्शी है, जिनकी बुद्धि में है कि हरेक का सतो-रजो-तमो स्टेज अनुसार पार्ट है, मुझे किसी की स्थिति से अपनी स्थिति नहीं बिगाड़नी हैं। अगर किसी के कारण मैं अपनी स्थिति बिगाड़ती तो यह भी खाता बनता है। ज्ञानी का अर्थ ही है कि किसी से अपना खाता न बनायें, अपना व्यवहार ऐसा हो जो खाते-पीते निराहारी, सबके साथ रहते बाल ब्रह्मचारी। हम हैं योगी लोग.. हमें कौन जाने। हमारी एक-एक घड़ी डायमण्ड (हीरे) समान है। संगमयुग डायमण्ड युग है। तो सवेरे से लेकर रात को सोते तक 18 घण्टे का चार्ट देखना है। नहाना धोना, खाना-पीना, क्लास में आना, योग करना, सेवा करना, दफ्तर में जाना, यह सब मेरे चार्ट में हैं। लौकिक में अलौकिक समझकर चलना है। कोई भी काम करो बाबा की सेवा है। बाबा और बाबा की सेवा के सिवाए तीसरा कुछ भी बीच में न हो। न मैं तेरी सेवा करती, न तू मेरी सेवा करता.. अगर मैं किसी की पर्सनल सेवा करता तो भी खाता बनता है। मुझे तेरा, मेरा खाता बनाना ही नहीं है। योगी का अर्थ है सब खाते खत्म हो। अगर मैं अपना समय वेस्ट थाट्स (व्यर्थ संकल्पों) में भी गंवाती हूँ - तो भी मेरा योग का खाता जमा नहीं होता। अगर मैं व्यर्थ बातें सुनती हूँ, तो वह सुनने में भी मेरा समय गया, अगर मैं व्यर्थ बोलती हूँ तो भी मेरा खाता जमा हुआ न कि खत्म हुआ। संगम पर एक-एक बात का बहुत बड़ा हिसाब-किताब है इसलिए मुझे बोलना सुनना ऐसा है - जिसमें मेरा कोई खाता न बने। इतनी सावधानी हम योगियों को रखनी है। अच्छा - ओम् शान्ति।

18-01-2026 के रिवाइज अव्यक्ति महावाक्यों के आधार पर बापदादा द्वारा मिला हुआ होमवर्क

हर एक अपने प्रति दो मास के लिए मन के व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय की बचत करने की विधि बनाओ।
जो बच्चे इसमें अटेन्शन देंगे उन्हें बापदादा एक्स्ट्रा सहयोग देगा।

नाम:..... **स्थान:** .....

स.	चेकिंग बिन्दु (पॉइन्टस्)						
1.	बाप समान बेफिकर बादशाह की स्थिति कितना रही? %						
2.	समर्थ संकल्प, समर्थ समय द्वारा वायुमण्डल को पावरफुल बनाने में सहयोगी रहे? %						
3.	स्वराज्य अधिकारी बन मन की कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पावर द्वारा समय और संकल्प दोनों सफल किया? %						
4.	कर्मयोगी की स्थिति पर अटेन्शन कितना रहा?%						